1,862 परियोजनाएँ, ₹38.11 लाख करोड़: PAIMANA की नज़र से देश का बुनियादी ढाँचा

मूल प्रकाशन: 27 नवंबर 2026

समाचार-संदर्भ: 25 नवंबर 2026 (सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की अक्टूबर 2026 फ़्लैश रिपोर्ट)

प्रिलिम्स: PAIMANA, मेगा और मेजर परियोजना की परिभाषा, HML श्रेणियाँ, भौतिक बनाम वित्तीय प्रगति

मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-III, अवसंरचना, परियोजना क्रियान्वयन, लागत संशोधन



pcsmantra.com

आँकड़ों की तिथि: इस लेख के सभी आँकड़े अक्टूबर 2026 की फ़्लैश रिपोर्ट के हैं। रिपोर्ट में वही परियोजनाएँ हैं जिनका ब्योरा संबंधित मंत्रालयों और एजेंसियों ने 20 नवंबर 2026 तक पोर्टल पर दर्ज किया था। जहाँ "गणना: pcsmantra" लिखा है, वहाँ आँकड़ा रिपोर्ट की संख्याओं से हमने निकाला है, रिपोर्ट में सीधे नहीं दिया गया।

खबरों में क्यों

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने 25 नवंबर 2026 को केंद्रीय क्षेत्र की अवसंरचना परियोजनाओं की मासिक फ़्लैश रिपोर्ट (अक्टूबर 2026) जारी की। इसके अनुसार 17 केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों की 1,862 चालू परियोजनाओं पर नज़र रखी जा रही है। इनकी नवीनतम लागत ₹38.11 लाख करोड़ है और अब तक ₹17.87 लाख करोड़ (लगभग 46.88 प्रतिशत) खर्च हो चुका है। इसी महीने 24 परियोजनाएँ चालू हुईं और 38 नई परियोजनाएँ निगरानी में जुड़ीं।

PAIMANA क्या है

मूल बात समझिए: बड़ी परियोजनाएँ तभी समय पर पूरी होती हैं जब कोई एक जगह यह देखता रहे कि काम कहाँ तक पहुँचा, कितना पैसा लगा और लागत कितनी बदली। PAIMANA यही काम करने वाला MoSPI का मंच है। पूरा नाम है Project Assessment, Infrastructure Monitoring and Analytics for Nation-building।

- **दायरा:** ₹150 करोड़ और उससे अधिक लागत की केंद्रीय क्षेत्र की अवसंरचना परियोजनाएँ।
- **डेटा का स्रोत:** परियोजनाएँ लागू करने वाले मंत्रालय, विभाग और एजेंसियाँ। इनका ब्योरा PAIMANA-CRIP (Central Repository of Infrastructure Projects) पर दर्ज होता है, जिसे MoSPI ने जुलाई 2026 में शुरू किया।
- **API से अपडेट:** MoSPI के अनुसार लगभग 80 प्रतिशत डेटा API के ज़रिए PAIMANA-CRIP पर अपने आप आता है।
- **नया नाम:** परियोजना निगरानी वाला इंटरफ़ेस अब PAIMANA-PROJ कहलाता है।
- **अगली रिपोर्ट:** नवंबर 2026 की फ़्लैश रिपोर्ट 28 दिसंबर 2026 को जारी होगी।
- **सीमा:** रिपोर्ट डिपार्टमेंट ऑफ़ इकोनॉमिक अफ़ेयर्स की हार्मोनाइज़्ड मास्टर लिस्ट (HML) के चुने हुए उप-क्षेत्रों को ही कवर करती है, पूरी सूची को नहीं।

एक नज़र में: अक्टूबर 2026 [रिपोर्ट के आँकड़े]

मद	आँकड़ा
चालू परियोजनाएँ	1,862 (17 मंत्रालय/विभाग)
मूल लागत	₹34,82,840 करोड़
संशोधित (नवीनतम) लागत	₹38,11,292 करोड़
अब तक व्यय	₹17,86,757 करोड़ (संशोधित लागत का 46.88%)
मेगा परियोजनाएँ (मूल लागत ₹1,000 करोड़ या अधिक)	790
मेजर परियोजनाएँ (मूल लागत ₹1,000 करोड़ से कम)	1,072
अक्टूबर में चालू हुईं	24
अक्टूबर में निगरानी में जुड़ीं	38 (सड़क परिवहन और राजमार्ग 23, इस्पात 5, विद्युत 3, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस 2, आवास और शहरी कार्य 2, उच्च शिक्षा 2, रेल 1)

pcsmantra.com

मेगा और मेजर का वर्गीकरण रिपोर्ट में मूल लागत के आधार पर है। प्रेस विज्ञप्ति में इसे "परियोजना लागत" कहा गया है, इसलिए परीक्षा में रिपोर्ट की परिभाषा ही याद रखें।

लागत का अंतर: क्या पढ़ें, क्या नहीं

मूल लागत ₹34,82,840 करोड़ और संशोधित लागत ₹38,11,292 करोड़ के बीच ₹3,28,452 करोड़ का अंतर है। गणना: pcsmantra के अनुसार यह मूल लागत का लगभग 9.43 प्रतिशत है।

ध्यान रखें:

- यह अंतर पूरे चालू भंडार का है, यानी सभी 1,862 परियोजनाओं की मूल और नवीनतम लागत का फ़र्क। यह केवल अक्टूबर में हुई बढ़ोतरी नहीं है।
- हर परियोजना की लागत बढ़ी नहीं है। संचार श्रेणी में संशोधित लागत (₹1,33,708 करोड़) मूल लागत (₹1,58,795 करोड़) से कम है। रिपोर्ट में BSNL की 4G सेवा परियोजना ₹28,466 करोड़ से घटकर ₹19,592 करोड़ दिखती है।

- रिपोर्ट यह नहीं बताती कि लागत क्यों बदली। इसलिए यह कहना ठीक नहीं कि सभी परियोजनाएँ देरी से चल रही हैं या हर संशोधन अनियमितता है।

श्रेणीवार अंतर (गणना: pcsmantra, अक्टूबर 2026 की रिपोर्ट से):

श्रेणी / मंत्रालय	मूल लागत (₹ करोड़)	संशोधित लागत (₹ करोड़)	बदलाव
परिवहन और लॉजिस्टिक्स	18,78,203	20,36,504	लगभग +8.4%
ऊर्जा	10,38,580	11,31,223	लगभग +8.9%
जल और स्वच्छता	1,01,236	1,96,659	लगभग +94.3%
संचार	1,58,795	1,33,708	लगभग -15.8%
रेल मंत्रालय	6,02,243	7,37,665	लगभग +22.5%
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय	9,40,731	9,55,245	लगभग +1.5%

भौतिक प्रगति बनाम वित्तीय प्रगति

भौतिक प्रगति बताती है कि ज़मीन पर काम कितना हुआ। वित्तीय प्रगति बताती है कि लागत का कितना हिस्सा खर्च हुआ। दोनों हमेशा एक जैसी नहीं चलतीं।

- 649 परियोजनाएँ (लगभग 35 प्रतिशत) में भौतिक प्रगति 80 प्रतिशत से ऊपर है। वहीं 326 परियोजनाओं (लगभग 18 प्रतिशत) में वित्तीय प्रगति 80 प्रतिशत पार कर चुकी है।
- **परियोजनाएँ दो छोरों पर ज़्यादा जमा हैं:** शुरुआती चरण (0 से 20 प्रतिशत) और अंतिम चरण (81 से 100 प्रतिशत)। यानी नई परियोजनाओं की कतार भी है और पूरी होने के क़रीब परियोजनाओं की भी।
- अंतिम चरण (81 से 100 प्रतिशत) में भौतिक प्रगति वित्तीय प्रगति से आगे है। शुरुआती चरणों में वित्तीय प्रगति अपेक्षाकृत ऊँची है, जिसे रिपोर्ट शुरुआती खर्च के ढर्रे से जोड़ती है।
- परिवहन और लॉजिस्टिक्स की 1,324 परियोजनाओं में 498 (37.61 प्रतिशत) भौतिक प्रगति के 81 से 100 प्रतिशत वाले बैंड में हैं, जबकि वित्तीय प्रगति के इसी बैंड में 224 (16.92 प्रतिशत) हैं। 284 परियोजनाएँ (21.45 प्रतिशत) दोनों पैमानों पर 0 से 20 प्रतिशत में हैं।

सावधानी: 46.88 प्रतिशत व्यय का मतलब यह नहीं कि कुल काम 46.88 प्रतिशत पूरा हो गया। इसीलिए रिपोर्ट भी भौतिक पूर्णता, व्यय, बचे काम और चालू होने की तैयारी को साथ देखने की बात कहती है।

किस मंत्रालय और क्षेत्र में कितना काम

मंत्रालयवार स्थिति [अक्टूबर 2026]:

मंत्रालय / विभाग	परियोजनाएँ	संशोधित लागत (₹ लाख करोड़)	व्यय अनुपात
सड़क परिवहन और राजमार्ग	972	9.55	51.02%
रेल	288	7.38	50.50%
कोयला	121	2.22	26.45%
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस	117	4.42	52.33%
विद्युत	108	6.55	32.03%
आवास और शहरी कार्य	50	3.44	49.19%
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण	33	1.93	69.81%

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के पास परियोजनाओं की संख्या सबसे अधिक है (972, यानी 52 प्रतिशत)। शेष 173 परियोजनाएँ (₹2.63 लाख करोड़) उच्च शिक्षा, नागरिक उड्डयन, इस्पात, दूरसंचार और अन्य विभागों में फैली हैं।

HML श्रेणीवार स्थिति [अक्टूबर 2026]:

श्रेणी	परियोजनाएँ	संशोधित लागत (₹ लाख करोड़)	व्यय अनुपात
परिवहन और लॉजिस्टिक्स	1,324	20.37	50.64%
ऊर्जा	229	11.31	39.49%
जल और स्वच्छता	48	1.97	69.95%
संचार	31	1.34	48.78%
सामाजिक और वाणिज्यिक अवसंरचना	79	0.95	40.46%
अन्य (कोयला, इस्पात, धातु और खनन, निर्माण; HML श्रेणी नहीं)	151	2.18	30.95%

- परिवहन और ऊर्जा मिलकर 1,553 परियोजनाएँ (83.41 प्रतिशत) हैं। परिवहन में सड़कें (972) और रेल (290 परियोजनाएँ, उप-क्षेत्र की गिनती) मिलाकर श्रेणी की परियोजनाओं की गिनती का लगभग 95.3 प्रतिशत हैं।
- ऊर्जा में बिजली उत्पादन की 38 परियोजनाओं की लागत ₹4,27,249 करोड़ है, पर व्यय अनुपात 33.51 प्रतिशत है। पारेषण और वितरण में यह 27.56 प्रतिशत है। ऊर्जा भंडारण में 83.75 प्रतिशत है।
- कोयले की 115 परियोजनाओं (₹1,82,780 करोड़) का व्यय अनुपात 27.50 प्रतिशत है, जो "अन्य" श्रेणी का औसत नीचे खींचता है।
- **अक्टूबर 2026 में चालू हुईं परियोजनाओं के उदाहरण:** कर्नाटक में कोप्पल-II और गदग-II के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के लिए पारेषण योजना (₹4,445 करोड़, 16 अक्टूबर 2026) तथा भिलाई इस्पात संयंत्र में कोक ओवन बैटरी संख्या 7 और 8 का पुनर्निर्माण (₹884.1 करोड़, 30 अक्टूबर 2026)।
- **नई जुड़ी परियोजनाओं के उदाहरण:** वाढवण बंदरगाह से NH-48 तक 8 लेन का नियंत्रित-पहुँच राजमार्ग (₹4,464 करोड़) और अहमदाबाद मेट्रो चरण 2A (₹2,169.04 करोड़)।

pcsmantra.com

परीक्षा की दृष्टि से विश्लेषण

नीचे के बिंदु pcsmantra का विश्लेषण हैं, रिपोर्ट के कथन नहीं।

- **निगरानी का मूल्य:** एक ही पोर्टल पर लागत, व्यय और प्रगति के आँकड़े होने से मंत्रालयों के बीच तुलना और समय रहते समीक्षा आसान होती है। API से स्वतः अपडेट होने पर हाथ से भरी रिपोर्टों की देरी घट सकती है।
- **परियोजना की तैयारी:** मूल और संशोधित लागत के बीच बड़ा फ़ासला अक्सर शुरुआती आकलन, डिज़ाइन में बदलाव, भूमि और मंज़ूरियों से जुड़ा हो सकता है। जल और स्वच्छता श्रेणी में संशोधित लागत मूल लागत से लगभग दोगुनी है, पर रिपोर्ट इसका कारण नहीं देती, इसलिए इसे पड़ताल का विषय मानें, निष्कर्ष नहीं।
- **भूमि और मंज़ूरी:** सड़क, रेल और पारेषण जैसी रेखीय परियोजनाओं में रास्ते की ज़मीन और वन-पर्यावरण मंज़ूरियाँ गति तय करती हैं।
- **क्षमता:** एक साथ हज़ारों परियोजनाएँ चलने पर ठेकेदारों, मशीनों और तकनीकी जनशक्ति की उपलब्धता मायने रखती है।
- **पूरक पक्ष:** व्यय अनुपात भौतिक पूर्णता का विकल्प नहीं है। कम व्यय अनुपात (जैसे कोयले में) का मतलब हमेशा देरी नहीं होता, क्योंकि परियोजना नई या चरणबद्ध भी हो सकती है।

चुनौतियाँ

- **रिपोर्ट का दायरा:** केवल ₹150 करोड़ और अधिक की केंद्रीय क्षेत्र परियोजनाएँ और HML के चुने हुए उप-क्षेत्र। राज्य क्षेत्र की परियोजनाएँ इसमें नहीं हैं।
- **आँकड़ों की गुणवत्ता:** आँकड़े संबंधित मंत्रालयों द्वारा दर्ज किए जाते हैं, इसलिए समय पर और सही प्रविष्टि निर्णायक है।

- **लागत संशोधन का कारण:** बिना कारण-वार ब्योरे के संख्या से अकेले निष्कर्ष निकालना जोखिम भरा है।
- **अनुवर्ती कार्रवाई:** निगरानी तभी उपयोगी है जब पिछड़ती परियोजनाओं पर समीक्षा और सुधार हो।

आगे की राह

तीन बातें मायने रखेंगी: पहली, परियोजना शुरू होने से पहले की तैयारी (आकलन, भूमि, मंज़ूरी) मज़बूत हो। दूसरी, रिपोर्ट में लागत संशोधन के कारण भी दिखें, ताकि संख्या के पीछे की कहानी पढ़ी जा सके। तीसरी, भौतिक और वित्तीय प्रगति को साथ पढ़कर समीक्षा हो। अगली रिपोर्ट 28 दिसंबर 2026 को आने की सूचना है, तब तक के रुझान से इन बिंदुओं की जाँच हो सकेगी।

pcsmantra.com

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. PAIMANA के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: यह सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय का अवसंरचना परियोजना निगरानी मंच है।

कथन 2: इसकी फ़्लैश रिपोर्ट ₹150 करोड़ और उससे अधिक लागत की केंद्रीय क्षेत्र की अवसंरचना परियोजनाओं को कवर करती है।

कथन 3: रिपोर्ट में मेगा परियोजना उसे माना गया है जिसकी मूल लागत ₹5,000 करोड़ या अधिक हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (a)

कथन 1 सही है। PAIMANA MoSPI का परियोजना निगरानी मंच है।

कथन 2 सही है। रिपोर्ट ₹150 करोड़ और उससे अधिक की केंद्रीय क्षेत्र परियोजनाओं पर आधारित है।

कथन 3 गलत है। रिपोर्ट में मेगा परियोजना की सीमा मूल लागत ₹1,000 करोड़ या अधिक है।

pcsmantra.com

प्रश्न 2. अक्टूबर 2026 की फ़्लैश रिपोर्ट में परियोजनाओं की संख्या के आधार पर कौन-सी श्रेणी सबसे बड़ी है?

(a) ऊर्जा

(b) परिवहन और लॉजिस्टिक्स

(c) जल और स्वच्छता

(d) संचार

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (b)

परिवहन और लॉजिस्टिक्स में 1,324 परियोजनाएँ हैं, जो कुल 1,862 का लगभग 71.1 प्रतिशत है। ऊर्जा में 229 परियोजनाएँ हैं।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "अवसंरचना परियोजनाओं की ऑनलाइन निगरानी से पारदर्शिता बढ़ती है, पर केवल व्यय के आँकड़े प्रगति की पूरी तस्वीर नहीं देते।" भौतिक और वित्तीय प्रगति के अंतर तथा लागत संशोधन के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: PAIMANA का परिचय; अक्टूबर 2026 में 1,862 परियोजनाएँ, ₹38.11 लाख करोड़ की नवीनतम लागत और लगभग 46.88 प्रतिशत व्यय।

मुख्य भाग में: एकीकृत डेटा और API से अपडेट के लाभ; 35 प्रतिशत परियोजनाओं में भौतिक प्रगति 80 प्रतिशत से ऊपर बनाम 18 प्रतिशत में वित्तीय प्रगति; मूल और संशोधित लागत का फ़र्क (श्रेणी के हिसाब से अलग, संचार में कमी, जल और स्वच्छता में बड़ी बढ़ोतरी); व्यय अनुपात की सीमाएँ; भूमि, मंज़ूरी, परियोजना तैयारी और क्षमता की बाधाएँ।

निष्कर्ष में: संतुलित मूल्यांकन; कारण-वार लागत संशोधन, भौतिक और वित्तीय प्रगति की साझा समीक्षा और अनुवर्ती कार्रवाई पर ज़ोर।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: PAIMANA MoSPI का परियोजना निगरानी मंच है। अक्टूबर 2026 की फ़्लैश रिपोर्ट में 1,862 केंद्रीय अवसंरचना परियोजनाएँ थीं, जिनकी नवीनतम लागत ₹38.11 लाख करोड़ और व्यय अनुपात लगभग 46.88 प्रतिशत है।

▼ प्रश्न 1. PAIMANA क्या है और किन परियोजनाओं पर नज़र रखता है?

यह MoSPI का परियोजना निगरानी मंच है। इसकी फ़्लैश रिपोर्ट ₹150 करोड़ और उससे अधिक लागत की केंद्रीय क्षेत्र की अवसंरचना परियोजनाओं को कवर करती है। अक्टूबर 2026 में इसमें 1,862 परियोजनाएँ थीं।

▼ प्रश्न 2. क्या ₹3.28 लाख करोड़ का अंतर अक्टूबर में बढ़ी लागत है?

नहीं। यह सभी 1,862 चालू परियोजनाओं की मूल लागत (₹34,82,840 करोड़) और संशोधित लागत (₹38,11,292 करोड़) का कुल अंतर है, जो मूल लागत का लगभग 9.43 प्रतिशत बैठता है। रिपोर्ट इसके कारण नहीं बताती।

▼ प्रश्न 3. 46.88 प्रतिशत व्यय का क्या मतलब है?

इसका मतलब है कि संशोधित लागत का लगभग 46.88 प्रतिशत अब तक खर्च हुआ है। यह भौतिक काम की पूर्णता नहीं है। भौतिक प्रगति अलग से मापी जाती है, और 649 परियोजनाओं में यह 80 प्रतिशत से ऊपर है।

pcsmantra.com

स्रोत

PIB: MoSPI की अक्टूबर 2026 फ़्लैश रिपोर्ट पर विज्ञप्ति (25 नवंबर 2026)

MoSPI: PAIMANA फ़्लैश रिपोर्ट, अक्टूबर 2026